

## कबीर के दोहे में निहित शिक्षक मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता

<sup>1</sup>डॉ लक्ष्मी उपाध्याय

<sup>1</sup>असिस्टेंट प्रोफेसर, दाऊदयाल महिला पीजी कॉलेज फिरोजाबाद

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

### Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र कबीर दास जी के चिंतन की आधुनिक परिणति के संबंध में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में बताया गया है कि कबीर दास एक महान भक्ति कवि थे जिन्होंने अपनी कविताएँ और दोहे के माध्यम से समाज में सामाजिक और धार्मिक संदेश प्रस्तुत किए। उनकी शायरी से न केवल उनके समक्ष बातचीत का द्वार खुलता है, बल्कि उनके द्वारा दिए गए संदेशों का महत्व आज भी अद्वितीय है। कबीर दास का चिंतन आधुनिक युग में भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उस समय था। उनकी बातें और संदेश सामाजिक और धार्मिक मुद्दों पर उत्तरदायित्वपूर्ण और विचारों पर आधारित हैं, जो आज के समय में भी महत्वपूर्ण हैं। कबीर दास के चिंतन की आधुनिक परिणति में उनकी विचारधारा के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक मुद्दों पर आधारित उनके संदेशों का महत्व है। आज के समय में भी उनके संदेशों और विचारधारा को समझते हुए हम आधुनिक समाज में सामाजिक समानता, धार्मिक सहिष्णुता और भाईचारे के माध्यम से समृद्धि और सुख-शांति को बढ़ा सकते हैं।

**बीज शब्द**— कबीर के दोहे, निहित शिक्षक, मूल्य, समकालीन प्रासंगिकता।

### Introduction

कबीर जी के दोहे से मेरा परिचय तब हुआ जब मैं हाई स्कूल में थी उस समय केवल पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में अध्ययन किया था। वास्तव में कबीर जी हमारी पीढ़ी के लिए अनमोल रत्न हैं। इन दोहों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। यह ज्ञान का सागर है। सामाजिक जीवन के हर पहलू पर बहुत सकारात्मक दृष्टिकोण और गहरी समझ देते हैं। प्रत्येक दोहों में ज्ञान का भंडार है। यह दोहे कबीर जी के दर्शन, रहस्यवाद, सर्वोच्च शक्ति में उनके गहरे विश्वास को दर्शाते हैं। उनके दोहे मानव मनोविज्ञान के हर पहलू पर प्रकाश डालते हैं जो वर्तमान में प्रासंगिक है। कबीर जी के दोहे के गहनतम विचारों को सहजता और सरलतम शब्दों में व्यक्त करने का तरीका इतना व्यावहारिक और सच्चा है कि कोई भी आसानी से समझ सकता है। उनके कई दोहे सार्वभौमिक रूप से प्रासंगिक व्यवहार से गहराई से जुड़े हुए हैं।

अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र सागर से कुछ बूंदे लेने का एक छोटा सा प्रयास है। कबीर जी के दोहे एवं साहित्य बहुत समृद्ध है अगर हम कबीर जी के दोहों एवं शिक्षा का अनुसरण करें तो हमारे जीवन को एक बेहतर दिशा प्रदान कर सकते हैं एवं हम कई समस्याओं से बच सकते हैं।

वर्तमान युग में प्रौद्योगिकी का युग है। हम तकनीकी रूप से बुद्धिमान हैं लेकिन भावनात्मक रूप से हममें बुद्धिमता की कमी है। वर्तमान युग मशीनी युग है इसी कारण व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य

समस्याओं से जूझ रहा है। अतः यह अति आवश्यक है कि हम कुछ ऐसा सीखें जिससे इन समस्याओं से छुटकारा पा सके। इस संबंध में कबीर जी के दोहे अत्यंत उपयोगी बिंदु हो सकते हैं।

कबीर 15वीं शताब्दी के एक रहस्यवादी संत कवि भारत में भक्ति आंदोलन के एक रत्न, दिव्यता को महसूस करने के मार्ग के रूप में ज्ञान मार्ग के एक मजबूत समर्थक, अपने लोकतंत्र के माध्यम से लोगों की सामाजिक स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले एक महान संत थे। उन्होंने अपने दोहों को आम बोलचाल की भाषा में लिखा। इसलिए उनकी बातें आसानी से लोगों तक पहुंची और उनके विचारों का प्रभाव पड़ा।

कबीर जी ने आत्म साक्षात्कार और प्रत्येक आत्मा में विद्यमान ईश्वर की कल्पना की। अपनी एक दोहे में उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य को संक्षेप में प्रस्तुत किया।

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोई।

ढाई आकर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

अर्थात् किताबें पढ़ पढ़ कर सब मर गए कोई पंडित नहीं बना जिसने ढाई अक्षर प्रेम का पढ़ लिया वह पंडित बन गया।

मासि कागज छुयो नहीं कलम गही न हाथ।

इसका सीधा तात्पर्य यह है कि कबीर दास पढ़े-लिखी नहीं थी लेकिन बहुश्रुत थे। जिस प्रकार गीता हमें निष्काम का संदेश देती है उसी प्रकार कबीर दास का काव्य हमें गृहस्थ जीवन बिताते हुए कर्मोन्मुख कर्म योगी होने का संदेश देता है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि सभी चीजों का निर्वाह करते हुए कबीर दास ने जीवन में कर्मयोगी दृष्टि दी।

#### उद्देश्य—

- वर्तमान पीढ़ी को ज्ञान, जीवन जीने के कौशल जिनसे हम भली-भांति परिचित हैं फिर भी रुचि एवं अज्ञान के कारण अनदेखा करते हैं।
- हम तकनीकी रूप से बुद्धिमान है ये अच्छा है परंतु संवेगात्मक रूप से कमजोर है क्यों?
- लोगों में गिरते हुए मानसिक स्वास्थ्य के क्या कारण हैं जैसे की चिंता, तनाव, अवसाद।
- सांस्कृतिक मूल्य एवं प्राचीन साहित्य मानसिक स्वास्थ्य में कैसे समझ में स्थापित कर सकते हैं।

#### कबीर दास के दोहे व व्यवहार के विकास दृष्टिकोण हेतु प्रमुख क्षेत्र

कबीर दास जी के दोहों के माध्यम से शिक्षण कार्य प्रभावित बनाया जा सकता है। इन दोहों के द्वारा बिना अपनी मिठास या ताजगी खोये बहुत कुछ सीखा जा सकता है। जिनमें यह तत्व प्रभावी हो सकते हैं।

#### \* ज्ञान—

ज्ञान रत्न का जतन कर, माटी का संसार ।

हाय कबीरा फिर गया, फीका है संसार ।

अर्थात् हमेशा ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करते रहना चाहिए। यह संसार में एक मूल्यवान वस्तु है। क्योंकि ज्ञान ही आपको मोक्ष की ओर ले जा सकता है। अन्यथा आप जीवन मृत्यु के चक्कर में लगे रहेंगे।

#### \* कौशल—

शीलवन्त सबसे बड़ा, सब रतनन की खान ।

तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन ॥,

अर्थात् शांति एवं शील मनुष्य के सबसे महान गुण एवं रत्न है। एक व्यक्ति जिसमें किसी भी परिस्थिति में शांति है तो वह संसार का सबसे धनी व्यक्ति है।

\* दृष्टिकोण— मंगान मरण समान है, मत कोई मांगे भीख ।

मांगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख ।।

अर्थात् किसी भी प्रकार की भीख मांगना चाहे इनाम, पैसा अथवा मान्यता इससे तो अच्छा मरना है। उपर्युक्त दोहे कबीर के शिक्षण मूल्यों के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण देते हैं जो आपको अपने शिक्षण के मध्य करना चाहिए। इस प्रकार का ज्ञान एवं शिक्षण आपको एक अच्छी स्थिति को प्राप्त करने का रास्ता प्रशस्त करता है। आपको किसी के भी सामने पुरस्कार अथवा मान्यता प्राप्त करने के लिए विनती करने की आवश्यकता नहीं है। अगर आपको अपने जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो स्थिति के अनुसार शांत रहना सीखिए।

#### कबीर दास के दोहे वह मूल तत्वों के साथ उनका गठबंधन

जीवन कौशल एक शब्द है जिसका प्रयोग सीखने या वास्तविक जीवन के अनुभवों के माध्यम से प्रभावित होता है। कबीर दास जी के अनुसार जीवन खुशहाल शांतिपूर्ण तभी हो सकता है जब आप निम्न कौशलों को अपनाएँ।

#### आत्म जागरूकता

जैसे तिल में तेल है, चकमक में आग ।

तेरा साईं तुझ में है, तू जाग सके तो जाग ।।

अर्थात् अगर आपको अपने अंदर उर्जा लानी है और कमजोरी पकड़नी है तो वास्तव में स्वयं को जानना होगा तभी यह संभव है।

#### आत्म जागरूकता का सकारात्मक प्रभाव

- तनाव से निपटने में बेहतर सक्षम,
- समय का बेहतर तरीके से प्रबंधन,
- प्रतिक्रिया व आलोचना लेने में रचनात्मक तरीके से बेहतर।

### आत्म नियंत्रण

मन के बहुत रंग हैं, छिन-छिन बदले सोए।

एक रंग में जो रहे, ऐसा बिरला कोई।।

अर्थात मन के बहुत से रूप होते हैं और यह हर पल बदलते रहते हैं एक ही रंग में रहना बहुत ही कठिन कार्य है।

### आत्म संयम का सकारात्मक प्रभाव

- परिणाम की याद दिलाना,
- प्रलोभनों से बचाना।
- निर्णय लेने की क्षमता।

### सहानुभूति

कबीरा सोई पीर है, जो जाने पर पीर।

जो पर पीर न जा नहीं, सो का पीर में पीर।।

अर्थात कोई किसी का दर्द कहां समझता है दर्द वही समझता है जो स्वयं उस स्थिति से गुजर चुका होता है।

### सहानुभूति का सकारात्मक प्रभाव

- अच्छे संबंध विकसित करने में मददगार।
- आत्म संतुष्टि प्रदान करने में सक्षम।

### संचार कौशल

बोली एक अमोल है, जो कोई बोले जानी।

हिय तराजू तौल के, तब मुख बाहर आनी।।

अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा बोलना चाहिए कि सुनने वाले के मस्तिष्क को प्रसन्न कर दे।

### अच्छे संचार कौशल का प्रभाव

- बेहतर रिश्ते।
- संघर्षों को बेहतर ढंग से संभाल सकते हैं।

### समय प्रबंधन

काल करे सो आज कर ,आज करे सो अब ।

पल में परलय होएगी, बहुरि करेगो कब ।।

अर्थात समय प्रबंधन जरूरी है कोई भी आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि कल कभी नहीं आता। यह कोई नहीं जानता की प्रलय कब आ जाएगी।

### समय प्रबंधन का सकारात्मक प्रभाव

- कार्य की बेहतर गुणवत्ता होना,
- समय पर काम होना,
- बहुत कम विलंब।

**तनाव प्रबंधन—** चिंता ऐसी डंकिनी, काट कलेजा खाए।

वेद्य विचारा क्या करें, कहां तक दवा लगाय।

अर्थात चिंता आग की तरह होती है जिस प्रकार आग अपने दायरे में आने वाली हर चीज नष्ट कर देती है वैसे ही चिंता व्यक्ति को मानसिक व शारीरिक तौर पर नष्ट कर देती है। अच्छे से अच्छा डॉक्टर भी इसका इलाज नहीं कर सकता। उसी प्रकार छात्र जीवन में कर्म करें फल अपने आप मिलेगा चिंता करने से कोई लाभ नहीं है।

### तनाव प्रबंधन का सकारात्मक प्रभाव

- आशावादी बने और कड़ी मेहनत पर विश्वास रखें।
- सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं।

### उपर्युक्त समस्याओं से निपटने के प्रयास

अब वह समय आ चुका है कि इन तेजी से बढ़ती हुई समस्याओं के बारे में सोचें एवं कैसे इनसे निपटा जाए। एक दिन हमें ऐसा रखना चाहिए जिसमें हम समाज में लोगों से जुड़े एवं उनके शिक्षण एवं अपने शिक्षण द्वारा मानसिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर विचार करें एवं जागरूक बने।

### निष्कर्ष—

आज हमारे समाज को तकनीकी एवं बुद्धिमानी दोनों तरह के शिक्षण की आवश्यकता है। मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों जैसे चिंता, तनाव, अवसाद आज की बदलती समस्याएं हैं। वर्तमान पीढ़ी दबाव में आकर अपनी भविष्य के मुद्दों को स्वीकार कर रही है जबकि उसे जीवन में विभिन्न कौशलों को समझना होगा और सामाजिक मूल्यों को समझना होगा तथा अपने जीवन में उतारना होगा। क्योंकि सिर्फ मूल्य एवं जीवन कौशल ही एक अच्छे मानव के निर्माण में सहायक हो सकते हैं।

कबीर जी के दोहे ही जीवन कौशल एवं सामाजिक मूल्यों को प्रदान करने में बहुत उपयोगी है क्योंकि उनके दोहे मानवीयता एवं जीवन प्रबंधन में सहायक है। इन दोहों के शिक्षण के द्वारा एवं

अपने जीवन में उतरने पर जीवन एक अलग ही मोड़ ले सकता है एवं व्यक्ति किताबी कीड़ा न होकर एक प्रायोगिक जीवन जी सकता है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कबीर की विचारधारा डॉ. गोविंद त्रिगुणायत पृ.218।
2. शोध प्रबंध—संत सूफी साहित्य में नैतिक तत्व, श्रीमती संगीता श्रीवास्तव।
3. कबीर का सामाजिक दर्शन— पृ.117 डॉ. प्रहलाद मौर्य।
4. कबीर ग्रंथावली पृ.104।
5. युग दृष्टा कबीर पृ. 40 अवधेश प्रसाद सिंह, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा।
6. कबीर और कबीर पंथ पृ.153 डॉ. केदारनाथ द्विवेदी।
7. कबीर पंथ का उद्भव एवं प्रसार पृ.62 डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।